डॉ. आर. के. तुगनावत
प्राचार्य
शा. होलकर विज्ञान महाविद्यालय, इंदौर
भंवरकुआ चौराहा, ए.बी. रोड, इंदौर–452001

प्रस्तावना

जीवन में नैतिक मूल्यों का विशेष महत्व है क्योंकि नैतिकता एवं संस्कारों से पोषित शिक्षा, युवा पीढ़ी को अपने महाविद्यालय, समाज व राष्ट्र को सही दिशा प्रदान करने में सक्षम होती है।

महाविद्यालय की मान्यता है कि यहाँ के विद्यार्थी, शिक्षक एवं कर्मचारी अपने समाज, प्रदेश एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित हो और अपने–अपने कार्य के प्रति जिम्मेदार, संवेदनशील, ईमानदार एवं उत्तरदायी बनें। इसका आशय यह कतई नहीं है कि अभी ये गुण हमारे महाविद्यालय परिवार में नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य परिवार के सदस्यों को इन गुणों से भविष्य में और सशक्त करना है।

मेरी मान्यता है कि इस नीति का निर्धारण करने में कई शिक्षक साथियों का परिश्रम समाहित है, मैं उन सभी को धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि हमारे परिवार का प्रत्येक सदस्य इस आचार संहिता को अपने जीवन में खुशी–खुशी आत्मसात करेगा।

डॉ. आर.के. तुगनावत

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	**1**
2	नैतिक मूल्य व पेशेवर आचार संहिता	**3**
3	उद्देश्य	**4**
4	नैतिक मूल्यों का संवर्धन	**4**
5	प्रमुख नैतिक गुण	**4**
6	कार्यस्थल मूल्य एवं उनका क्रियान्वयन	**5**
7	नैतिक मूल्यों एवं व्यवसायिक नैतिकता को बढ़ावा देने वाले कार्य	**6**
8	नैतिक मूल्यों एवं व्यवसायिक नैतिकता को और बढ़ावा देने वाली योजनाएँ	**7**
9	पाठ्यक्रम के विषय	**7**
10	आभार	8

नैतिक मूल्य व पेशेवर आचार संहिता

Values and Professional Ethics Policy

परिचय :

वर्तमान में उच्च शिक्षा के विभिन्न आयाम स्थापित हो गए हैं जिनमें प्राप्तांक, योग्यता, विषयों में प्रवीणता तथा कुशलता का महत्व बढ़ा है। पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के दौर में रोजगार के साथ ही पुरस्कार व प्रशंसा का महत्व भी बढ़ा है। यह प्रतिस्पर्धा स्वस्थ वातावरण में, प्रतिभा के आधार पर स्वयं की उन्नति के साथ संस्थान को सफलता के उत्कृष्ट शिखर पर पहुँचाने व अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज व देश की भलाई के उद्देश्य से हो तो ही उसकी सार्थकता सिद्ध होती है व दूरगामी परिणाम सुखद हो सकते हैं। आजीविका के लिए आवश्यक कौशल व प्रवीणता प्राप्त करना उच्च शिक्षा का एक उद्देश्य हो सकता है परन्तु प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में मानव मूल्यों का महत्व कम नहीं होना चाहिए।

महाविद्यालय की मान्यता है कि उच्च शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे विद्यार्थी को विषय की प्रवीणता, कौशल व महारथ तो हासिल हो, साथ ही वे अपनी संस्कृति, सही परंपराओं व नैतिक मूल्यों के महत्व को समझ उनके साथ अपनी उन्नति विकास व सफलता प्राप्त करना जीवन का उद्देश्य बनाएँ।

अतः आवश्यक है कि युवा पीढ़ी विद्या अध्ययन के साथ मानव मूल्यों के महत्व को समझे, उन्हें जीवन में उतारे व उनसे न विचलित होने के संस्कार का पोषण करें। शिक्षा, नैतिकता व संस्कारों के साथ विकसित होने वाली युवा पीढ़ी ही सही अर्थों में महाविद्यालय, समाज व राष्ट्र को सही विकास के रास्ते पर ले जाने में समर्थ होगी।

यूनेस्को द्वारा शिक्षा के निम्न चार प्रमुख उद्देश्यों की ओर इशारा किया गया –

1. **शिक्षा – जानने समझने के लिए (ज्ञान प्राप्ती के लिए)।**
2. **सीखना – कौशल प्राप्त करने के लिए।**
3. **सीखना – सबको साथ लेकर चलने के लिए।**
4. **सीखना – व्यक्ति की क्षमताओं व मानव मूल्यों को विकसित करने के लिए।**

कुछ अतिआवश्यक बुनियादी मूल्यों जैसे ईमानदारी, जवाबदारी, निष्पक्षता, एक दूसरे के प्रति सम्मान, स्नेह प्रेम, आपसी विश्वास व जिम्मेदारी, जवाबदेही के साथ उत्कृष्ठता की खोज करने का वातावरण कार्यस्थल पर कार्य संस्कृति का न सिर्फ आधार हो, अपितु अभिन्न हिस्सा हो।

कार्य स्थल पर कुछ गुण विकसित होना अतिआवश्यक हैं जैसे समग्रता, कर्मठता, पारदर्शिता, दृढ़ता, जिम्मेदारी, निष्ठा, मजबूत आत्मविश्वास, आत्म निर्भरता, कार्य नैतिकता, विकास के लिए सतत प्रयास व आपसी सद्भाव, समझौता, संगठित हो कार्य करने की मानसिकता के साथ आपसी विश्वास द्वारा नियमों का दृढ़ता व निष्पक्षता से पालन।

शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय अनुशासन एवं शिक्षा के नैतिक मूल्यों का पालन करने, करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्षों के अनुभव से महाविद्यालय ने यह सुनिश्चित किया है कि यहाँ के विद्यार्थी, शिक्षक व कर्मचारी मात्र कौशल से नहीं बल्कि चरित्र व नैतिक मूल्यों से भी सशक्त हों।

महाविद्यालय के ये सतत प्रयास रहे हैं और भविष्य में भी रहेंगे कि यहाँ का हर व्यक्ति समाज के प्रति जिम्मेदार, संवेदनशील, ईमानदार एवं उत्तरदायी हो।

उद्देश्य :

महाविद्यालय ने नैतिक मूल्यों व पेशेवर आचार नीतियों के लिये निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं–

1. महाविद्यालय के हर सदस्य में चिरस्थायी प्रसन्नता हो।
2. समाज की समस्याओं के निदान के लिए सभी सदस्य संवेदनशील हो।
3. शिक्षक, विद्याार्थियों के रोल मॉडल बनें।
4. महाविद्यालय के अधिकारी संवेदनशील, जिम्मेदार, ईमानदार व निष्पक्ष हो पारदर्शिता व सजगता से कार्य करें।
5. विद्यार्थी ज्ञान पिपासु हों तथा अनुशासन में रहें।
6. नैतिक मूल्यों व कार्यस्थल पर आचार नीतियों का पालन करना हर किसी का कर्तव्य हो।
7. मानव मूल्यों व पेशेवर नैतिकता बढ़ाने के लिए सूत्रबद्ध रणनीति वाली कार्यप्रणाली विकसित करना।
8. विद्यार्थियों में शिक्षा रणनीति व कार्यप्रणाली विकसित करना।
9. महाविद्यालय के सभी सदस्यों द्वारा आचार संहिता के पालन की निगरानी करना।
10. विद्यार्थियों व शिक्षकों के बीच ऐसा सहज रिश्ता कायम करना जिससे वे अपनी समस्याओं व तकलीफों को अपने शिक्षकों से स्वाभाविक रूप से 'सांझा' कर लाभांवित हो सकें।

नैतिक मूल्यों का संवर्धन

महाविद्यालय के समस्त शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य का संवर्धन महाविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य है।

नैतिक मूल्यों व उच्च चारित्रिक गुणों का रोपण पोषण व विकास इस महाविद्यालय के मुख्य नीति निर्देशक तत्व के रूप में विद्यमान है।

महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ निम्न उल्लेखित मूल्यों के प्रतिपादन के लिए कृत संकल्पित हों।

प्रमुख नैतिक गुण

होलकर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर का हर कर्मचारी, प्राध्यापक नैतिक मूल्यों से लेशमात्र भी विचलित न हो बल्कि ये नैतिक मूल्य उसके अवचेतन मन मस्तिष्क में स्थायी रूप से दृढ़तापूर्वक रच बस जाएँ यही प्रयास हमेशा से रहे हैं।

महाविद्यालय द्वारा निम्नानुसार नैतिक मूल्यों की सीपना अंगीकृत की गई हैं –

(1) न्यायधारिता

अपनी शक्तियों के उपयोग, अपने अधिकारों व प्रभुत्व का निर्वहन करते समय अपने कर्तव्यों का पालन एवं महाविद्यालय के कल्याण हेतु संसाधनों का प्रयोग करते समय संलिप्तता एवं स्वामित्व की भावना के स्थान पर कृतज्ञता एवं विनम्रता की भावना हो साथ ही न्यायसंगत, भेदभाव रहित कार्यप्रणाली हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए।

(2) सत्यनिष्ठा

अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनाया गया हर मार्ग, हर कदम सत्यनिष्ठ व न्यायसंगत हो जिससे अनुकरणीय उदाहरण स्थापित हो सके।

(3) उत्कृष्टता

उत्तरोत्तर बौद्धिक विकास के साथ संपादित किए जाने वाले हर कार्य में सर्वोच्च गुणवत्ता व उत्कृष्टता दिखाई दे।

(4) समानता

महाविद्यालय द्वारा दी जाने वाली शिक्षा से प्रत्येक सोपान व्यवसाय, जीविकोपार्जन एवं अन्य सभी गतिविधियों से समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को समान अवसर उपलब्ध कराएगा।

(5) कृतज्ञता

संस्था व उसके सदस्यों की पंक्ति के अंतिम छोर पर खड़े राष्ट्रजनों के प्रति कर्तव्य निर्वहन में कृतज्ञता व आदर का भाव हो।

(6) प्रकृति प्रेम

प्रकृति, परिवेश, पर्यावरण, पानी, पेड़–पौधे व पशु पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता व संरक्षण की भावना प्रबल हो ताकि प्राकृतिक संसाधनों का मितव्ययी व अतिआवश्यक उपयोग हो।

(7) नवीनता

कर्मठता, नेतृत्वता एवं विचारों में अनंत विविधताओं के साथ ही सबकी भलाई की दृष्टि से शोध किये जाने हेतु प्रयास किये जाये जिसमें नवीनता के साथ सामाजिक मुद्दों से जुड़ी समस्याओं का निदान विशेष रूप से हो।

कार्यस्थल मूल्य एवं उनका क्रियान्वयन

शिक्षकों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों के आचरण में आवश्यक बदलाव व सुधार हेतु कार्यस्थल मूल्य स्थापित किए गए हैं जो मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करें। महाविद्यालय द्वारा निम्न मूल्यों को सदैव प्राथमिकता प्रदान की जावे –

1. **उत्तरदायित्वः—** सभी कार्यों के प्रति अपनी जिम्मेदारी, संवेदनशीलता व ईमानदारी से निभाने का उत्तरदायित्व बोध विकसित करना।

2. **पारदर्शिताः—** जहाँ तक संभव हो सके प्रत्येक कार्य को पूर्ण पारदर्शिता के साथ करना व प्रत्येक बात की सूचना व जानकारी सभी तक पहुँचाने का प्रयास करना।

3. **अनुशासनः—** संस्था में सभी के द्वारा अपने कार्य पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी से समयसीमा में नियम संगत तरीकों से सम्पन्न हो। इस हेतु सख्त अनुशासन हो।

4. **न्यायोचित कार्यः—** सभी कार्य पूर्ण विवेक व न्याय के साथ हो।

5. **दृढ़ताः—** संस्था के सभी सदस्यों में यह भावना विकसित करना कि सभी चुनौतियों के बावजूद लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ता एवं ईमानदारी से सतत प्रयास जारी रखें।

6. **सहानुभूतिः—** संस्था प्रमुख व सभी सदस्य परस्पर गरिमापूर्ण एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, सहानुभूति का भाव रखेंगे।

7. **क्षमताः—** संस्था के सदस्य अपने समग्र ज्ञान, कौशल व क्षमता से, कुशलतापूर्वक कार्यों को संपन्न करेंगे।

8. **टीमवर्कः—** अपने व्यक्तिगत हितों व विचारों से ऊपर उठ सभी हर कार्य को, टीमवर्क के रूप में पूर्ण करेंगे।

9. **संरक्षणः—** संस्था प्रमुख व संस्था का हर सदस्य प्राकृतिक संसाधनों का किफायती उपयोग कर, उनके संरक्षण को अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझेगा।

10. **संस्था का हित सर्वोपरीः—** हर कार्य को करते समय हर सदस्य संस्था के प्रति अपनत्व व समर्पण भाव रखेगा व हर स्थिति में संस्था का हित सर्वोपरी होगा।

नैतिक मूल्यों एवं व्यवसायिक नैतिकता को बढ़ावा देने वाले कार्य

नैतिक मूल्यों एवं सिद्धांतों द्वारा महाविद्यालय में स्वस्थ परम्पराएँ, उचित वातावरण निर्मित करने में संकाय सदस्यों व कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसलिए यह अपेक्षा है कि प्राध्यापकों व कर्मचारियों का आचार, व्यवहार एवं मानसिकता, सकारात्मक व नैतिकता से परिपूर्ण हो।

अरस्तू ने कहा है ''भावनात्मक शिक्षा के बिना दिमागी शिक्षा अशिक्षा के समान है।'' उक्त कथन की परिणीती के लिए निम्न कार्य योजनाएँ प्रस्तावित है –

1. मानवीय मूल्यों व नैतिकता की शिक्षा हेतु संबंधित विषयों पर कार्यशाला, संगोष्ठी एवं सम्मेलन तथा सेमिनार आदि का समय–समय पर आयोजन।
2. इस क्षेत्र के प्रतिष्ठित विषय विशेषज्ञ व्यक्तियों, के व्याख्यान आयोजित करना।
3. महाविद्यालय के सभी सदस्यों को सामाजिक हितों के मुद्दों से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु मंच प्रदान करना।

नैतिक मूल्यों एवं व्यवसायिक नैतिकता को और बढ़ावा देने वाली योजनाएँ

छात्रों में मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता की भावना विकसित करने हेतु महाविद्यालय द्वारा मानवीय मूल्य एवं नैतिकता विषय पर सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भविष्य में प्रारंभ करने की योजना है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को चरित्रवान, जिम्मेदार व संवेदनशील नागरिक बनाना होगा। इस हेतु पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार हो सकता है–

1. सही समझाइश द्वारा नैतिक मूल्यों की शिक्षा को विश्वव्यापी स्तर तक विकसित करना।
2. छात्रों में स्वयं की समझ विकसित करना ताकि वे अच्छे–'बुरे, सही–गलत की पहचान कर सकें।
3. छात्रों की प्रतिभा व चेतना में गुणात्मक परिवर्तन लाना।
4. उन्हें उच्च शिक्षा के साथ संस्कारों व स्वस्थ परम्पराओं का पालन करना सिखाना।
5. पैसे के प्रभाव व पहचान का लाभ लेकर सफल होने की बजाए, प्रतिभा, योग्यता व मेहनत से सफलता हासिल करने को सर्वोपरि ध्येय बनाना।

पाठ्यक्रम के विषय

मानवीय मूल्यों व नैतिकता का पाठ सिखाने वाले प्रस्तावित सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम में निम्न बिन्दुओं को विषयवस्तु के रूप में सम्मिलित किये जाना प्रस्तावित है –

1. मानवीय मूल्य एवं नैतिकता।
2. अन्वेषण।
3. स्वअभिलाषा एवं उसकी वैधता।
4. स्वयं एवं परिवार में अपनत्व एवं एकता।
5. समाज के हित में प्रकृति से जुड़ाव।
6. विश्वव्यापी भाईचारे एवं मित्रता पर समग्र विचार।
7. सामाजिक बंधनों एवं परम्पराओं का परिपालन।
8. स्त्री जाति के सम्मान व सुरक्षा के प्रति संवेदनशीलता।
9. अपने क्रियाकलापों में नैतिकता का आचरण।
10. प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण संरक्षण में योगदान।

उपरोक्त विषय उदाहरण मात्र हैं एवं विस्तृत रूप से वर्णित नहीं है। कक्षाओं में होने वाली पारस्परिक चर्चाओं, अतिथि व्याख्यान, सेमिनार, कार्यशाला द्वारा इन्हें विस्तृत रूप से समझाया व पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाएगा।

प्रचलित पाठ्यक्रम के अलावा विद्यार्थियों को समाज सेवा व सामाजिक मुद्दों पर आधारित चर्चाओं में आवश्यक रूप से भाग लेने हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाएगा जिससे उनमें समाज के प्रति जागरूकता व जवाबदेही का भाव जागृत होगा।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा व्यावसायिक नीतियों के संबंध में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य हमारे गौरवशाली राष्ट्र की विरासत की रक्षा के लिए ज्ञान के साथ विद्यार्थियों में चेतना का निर्माण करना है जिससे मूलतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ ही युवाओं में राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति व राष्ट्र के लिए समर्पित होने का जज्बा हो वे प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद व संविधान को समझे, उसका सम्मान करते हुए शांति व प्रेम का महत्व समझें व आजीवन उसका पालन करें।

होलकर महाविद्यालय, आयोग द्वारा उपर्युक्त वर्णित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये कृत संकल्पित है अर्थात् शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों में स्वअनुशासन, नियमबद्धता, नैतिकता, जवाबदेही पूर्ण कार्य पद्धति से कार्य करने तथा पूर्ण समर्पित भाव विकसित करने हेतु प्रयासरत है।

आशा है महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रशासक व शिक्षक सब मिलकर ऐसा वातावरण निर्मित करें जिससे विद्यार्थियों में स्वयं ही उनका अनुसरण करने की प्रवृत्ति बढ़े व उच्च मानवीय मूल्य तथा नैतिकता कार्यस्थल पर प्रस्थापित हो सके जो समाज के लिए एक आदर्श इकाई व संस्था के गौरवशाली बने रहने का प्रमाण सिद्ध होगी।

आभार

इस नीति को तैयार करने में प्राध्यापक साथी डॉ. मनमोहन प्रकाश श्रीवास्तव, डॉ. साधना विवरेकर, डॉ. विपुल कीर्ति शर्मा, प्रो. व्ही. पी. वर्मा, डॉ. विभा दुबे, डॉ. अंगूरबाला बाफना तथा प्रो. प्रतिभा मजूमदार की प्रमुख भूमिका रही हैं। सभी को प्राचार्य की ओर से बधाई एवं धन्यवाद। हमें विश्वास है कि यह नीति महाविद्यालय में कर्मचारियों, अधिकारियों तथा शिक्षकों के मध्य अच्छा वातावरण निर्मित करने में सहायक होगी जो महाविद्यालय, समाज व राष्ट्र को सही विकास के रास्ते पर ले जाने में समर्थ होगा।

मेरे सपनों का भारत

मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा, जिसमें गरीब से गरीब आदमी भी यह महसूस करे कि यह उसका देश है, जिसके निर्माण में उसकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा, जिसमें ऊँच-नीच का कोई भेद न हो। जातियाँ मिलजुल कर रहती हों। ऐसे भारत में, अस्पृश्यता व शराब तथा नशीली चीजों के लिए, कोई स्थान न होगा। उसमें स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार मिलेंगे। सारी दुनिया से हमारा सम्बन्ध शांति और भाईचारे का होगा। यह है मेरे सपनों का भारत।

मोहनदास करमचंद गांधी